सरकारी अधिकारियों की विदेशी पत्नियां

2266. **श्री मोलहू प्रसाद** : क्या गृह-कार्य मंत्री 22 मार्च, 1968 के अतारांकित प्रश्न संख्या 4821 के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) उपरोक्त प्रश्न के उत्तर में सभा-पटल पर रखे गये विवरण में बताये गये, मंत्री चार राजदूतों तथा 160 अधिकारियों के नाम क्या हैं ;

(ख) वे लोग कौन-कौन से पदों पर नियुक्त हैं और वे किन-किन मंत्रालयों/किन-किन देशों में नियुक्त हैं ;

(ग) उनकी पत्नियां मूलत: किस-किस देश की हैं ;

(घ) उन सरकारी अधिकारियों के नाम क्या हैं जिन्होंने विदेशी महिलाओं के साथ विवाह करने से पहले सरकार की अनुमति प्राप्त की थी ; और

(ङ) उन अधिकारियों के नाम क्या हैं जिनकी पत्नियों को भारतीय नागरिकता प्रदान की गयी है ?

गृह-कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री विद्या चरण शुक्ल) : (क) से (ङ). मंत्री महोदय का नाम डा० चंद्रशेखर है, जो स्वास्थ्य एवं परिवार नियोजन मंत्रालय में मंत्री हैं।

अन्य मुद्दों पर जानकारी एकत्रित की जा रही है।

केन्द्रीय सरकार के कर्मचारी

2267. **श्री मोलहू प्रसाद** : क्या गृह-कार्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि उन कर्मचारियों को अफसर धमकियां दे रहे हैं जो सरकार द्वारा बनाए गए नियमों के अनुसार कार्य करते हैं ;

(ख) क्या यह भी सच है कि केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों को उनके अफसरों द्वारा बहुत अधिक कार्य सौंपा जाता है जो अपने स्टैनोग्राफरों को कभी भी काम में नहीं लाते ; और

(ग) यदि हां, तो सरकार का अफसरों तथा स्टैनोग्राफरों को पूरी तरह व्यस्त रखने के लिये क्या कार्यवाही करने का विचार है ?

गृह-कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री विद्या चरण शुक्ल) : (क) और (ख). गृह मंत्रालय के ध्यान में ऐसे कोई दृष्टान्त नहीं आये हैं।

(ग) प्रश्न नहीं उठता।

मद्रास हिन्दी अध्यापक संघ

2268. **श्री बलराज मधोक** :
श्री शारदानन्द :
श्री अटल बिहारी वाजपेयी :
श्री वंश नारायण सिंह :
श्री जगन्नाथ राव जोशी :

क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि मद्रास हिन्दी अध्यापक संघ ने हाल ही में उप-प्रधान मंत्री को राजपालायन में एक ज्ञापन प्रस्तुत किया था ;

(ख) यदि हां, तो उसका ब्यौरा क्या है ; और

(ग) उस पर सरकार ने अब तक क्या कार्यवाही की है ?

शिक्षा मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री शेर सिंह) : (क) जी, हां।

(ख) संघ को डर था कि मद्रास राज्य द्वारा त्रिभाषा सूत्र समाप्त किए

जाने के फलस्वरूप स्कूल पाठ्यक्रम में से हिन्दी को हटा देने के परिणामस्वरूप लगभग 2,500 हिन्दी अध्यापकों का रोजगार समाप्त होने की संभावना थी। संघ ने इन फालतू हिन्दी अध्यापकों को उपयुक्त रूप से खपाने के लिए मद्रास सरकार पर दबाव डालने हेतु भारत सरकार से हस्तक्षेप की मांग की थी। उन्होंने भारत सरकार से एक ऐसी योजना तैयार करने करने का भी अनुरोध किया था जिसके अन्तर्गत इन फालतू अध्यापकों की सेवाओं का उपयोग उन व्यक्तियों को हिन्दी पढ़ाने के लिए किया जा सके जो उस भाषा को सीखना चाहें।

(ग) मद्रास सरकार ने सभी योग्य फालतू हिन्दी अध्यापकों के लिए वैकल्पिक रोजगार की व्यवस्था करने के लिए आदेश जारी कर दिए हैं। ऐसा समझा जाता है कि केवल वहां फालतू हिन्दी अध्यापक, जो अर्हता प्राप्त और प्रशिक्षित नहीं हैं या जो छुट्टी जाने वाले व्यक्तियों के स्थान पर कार्य कर रहे थे, छंटनी किए जाएंगे। ऐसे अध्यापकों में अधिकतर महिलाएं हैं और उनकी संख्या 500 से अधिक नहीं होगी इस मंत्रालय की हिन्दी शिक्षा समिति की कार्यकारिणी उप समिति की सिफारिश के अनुसार दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा से मद्रास राज्य के कुछ चुने हुए स्थानों में उन व्यक्तियों के लिए हिन्दी विद्यालय खोलने की एक विस्तृत योजना तैयार करने के लिए कहा गया है जो यह भाषा सीखने के इच्छुक हों। ये विद्यालय अधिकतर एक-अध्यापक संस्थाएं होंगी और मद्रास सरकार द्वारा छंटनी किए गए अध्यापकों को इन विद्यालयों में खपाने का हर संभव प्रयत्न किया जाएगा। उपसमिति ने यह भी सिफारिश की है कि ऐसे विद्यालयों को चलाने के लिए भारत सरकार द्वारा शत प्रतिशत वित्तीय सहायता दी जानी चाहिए। सभा से विस्तृत प्रस्ताव प्राप्त होने पर इस मामले पर भारत सरकार द्वारा और आगे विचार किया जाएगा।

दिल्ली में माओ का साहित्य

2269. **श्री सीताराम केसरी :**
श्री शशि भूषण वाजपेयी :

क्या गृह-कार्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या उनका ध्यान समाचारपत्रों के इस आशय के समाचारों की ओर दिलाया गया है कि चीन के तानाशाह माओ-त्से तुंग का प्रचार साहित्य दिल्ली में बहुत बड़ा मात्रा में उपलब्ध है ;

(ख) यदि हां, तो क्या सरकार ने उक्त साहित्य के स्रोत और उन व्यक्तियों या संस्थाओं के नामों का पता लगाने का प्रयास किया है जो राजधानी में यह साहित्य बांट रहे हैं ;

(ग) क्या सरकार को यह भी पता है की "रेड बुक" की बहुत सी प्रतियां दिल्ली विश्वविद्यालय के अनेक विद्यार्थियों, लेखकों और स्तम्भ लेखकों के पते पर भेजी गई हैं ; और

(घ) यदि हां, तो इस सम्बन्ध में सरकार की क्या प्रतिक्रिया है ?

गृह-कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री विद्या चरण शुक्ल): (क) जी, हां, श्रीमान्।

(ख) माओ-त्से-तुंग की कुछ पुस्तकें भावना प्रकाशन, सुभाषनगर दिल्ली द्वारा हिन्दी और उर्दू में प्रकाशित हुई हैं। कुछ पुस्तकें चीनी दूतावास ने डाक द्वारा तथा दूतावास में जाने वाले व्यक्तियों के माध्यम से बांटी हैं।

(ग) पता लगा है कि चीनी दूतावास ने "रेड बुक" नामक माओ की कृति की प्रतियां दिल्ली विश्वविद्यालय के कुछ विद्यार्थियों, लेखकों तथा कालम लेखकों के पतों पर भेजी हैं।

(घ) माओ साहित्य को केवल मात्र प्रकाशित करने या उसे बांटने पर वर्तमान